शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-2 (April-June) 2026
Page No- 28-31
DOI- 10.71037/Shodhaamrit.v3i2.06
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

1. सुनीति त्यागी
शोधार्थी, आई.आई.एम.टी, विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश.

2. डॉ. पूनम शर्मा
शोध निर्देशिका, आई.आई.एम.टी विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश.

Corresponding Author :

सुनीति त्यागी
शोधार्थी, आई.आई.एम.टी, विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश.

छायावादी काव्य में पर्यावरणीय दृष्टि और चिंतन

शोध सार : प्राचीन भारतीय संस्कृति के ऋषि-मुनियों ने वृक्ष, जल, भूमि इत्यादि को स्वंय से बढकर माना है। उनका मानना था कि हमारा शरीर पंचतत्वों से मिलकर बना है अगर हम एक भी महाभूत को पूरी तरह से नष्ट कर देते है तो उसका दूषित प्रभाव हमारे जीवन पर भी जरूर होगा। इसलिए प्राचीनकाल में मानव ने अपने जीवन के संरक्षण के लिए पर्यावरण के साथ अपने संबंध स्थापित किए मानव और प्रकृति का समन्वय तब से आज तक चला आ रहा है। उदाहरण के तौर पर हम देख सकते है कि मानव का नदियों के समीप अपने निवास स्थान बनाना, अस्थि प्रस्तर उपकरण का प्रयोग करना आदि हो सकते है। मानव के निर्मित शैलाश्रयों और गुफाओं में अनेक ऐसे प्रागैतिहासिक चित्र मिले है जिनसे पता चलता है कि मानव सभ्यता को इन सबको ज्ञान हो चुका था कि हमारा जीवन प्रकृति की समीप रहने से अधिक खुशहाल और समृद्ध हो सकता है। यही भावना हम आधुनिक काल के छायावाद युग के कवियों में देखते है। छायावादी काव्य की रचनाएं प्रकृति के समीप हैं जिनमें प्रकृति का विलक्षण प्रभाव और प्रकट करने की तीव्र भावना देखने को मिलती है।

बीज-शब्द : विलक्षण, सहस्त्राब्दियों, वात्सल्यमय, नैसर्गिक, तादात्म्य।

प्रस्तावना : प्राचीन भारतीय संस्कृति के ऋषि-मुनियों ने वृक्ष, जल, भूमि इत्यादि को स्वंय से बढकर माना है। उनका मानना था कि हमारा शरीर पंचतत्वों से मिलकर बना है अगर हम एक भी महाभूत को पूरी तरह से नष्ट कर देते है तो उसका दूषित प्रभाव हमारे जीवन पर भी जरूर होगा। इसलिए प्राचीनकाल में मानव ने अपने जीवन के संरक्षण के लिए पर्यावरण के साथ अपने संबंध स्थापित किए मानव और प्रकृति का समन्वय तब से आज तक चला आ रहा है। उदाहरण के तौर पर हम देख सकते है कि मानव का नदियों के समीप अपने निवास स्थान बनाना, अस्थि प्रस्तर उपकरण का प्रयोग करना आदि हो सकते है। मानव के निर्मित शैलाश्रयों और गुफाओं में अनेक ऐसे प्रागैतिहासिक चित्र मिले है जिनसे पता चलता है कि मानव सभ्यता को इन सबको ज्ञान हो चुका था कि हमारा जीवन प्रकृति की समीप रहने से अधिक खुशहाल और समृद्ध हो सकता है। यही भावना हम आधुनिक काल के छायावाद युग के कवियों में देखते है। छायावादी काव्य की रचनाएं प्रकृति के समीप हैं जिनमें प्रकृति का विलक्षण प्रभाव और प्रकट करने की तीव्र भावना देखने को मिलती है। भारतीय सस्कृति सहस्त्राब्दियों से प्रकृति की स्नेह गोद में पल्लवित और पुष्पित हुई हैं प्रकृति की विशिष्ट रचनाओं जैसे पर्वत, समुद्र वन इत्यादि सभी भारत देश में प्रचुर मात्रा में विधमान है। और इन्होने भारत को

विभिन्न प्रकार से विशिष्ट रुप प्रदान किया है भारतीय सस्कृति पर्यावरणीय दृष्टि से एक सम्पन्न राष्ट्र माना जाता रहा है। यह पर्यावरणीय संस्कृति एकाएक उत्पन्न नहीं हुई है, बल्कि हमारी प्राचीन सभ्यता जो इतने युगों से पर्यावरण से जुड़ी रही यह उसी का योगदान है।

उद्देश्य : छायावादी कवियों के काव्य में समाहित पर्यावरणीय चेतना को जानना एवं इस युग के विविध पर्यावरण सम्बन्धी स्वरुपों की खोज करना ही प्रमुख उद्देश्य है।

छायावादी काव्य में पर्यावरणीय दृष्टि और चिंतन : प्रतिदिन की हमारी दिनचर्या इन सब से जुड़ी हुई है। इसके परिणामस्वरुप ही हमारे अनुभवों में वृद्धि होती है। साहित्य और समाज का संबंध अटूट रहा है। यही कारण है कि साहित्य के माध्यम से मानव जीवन के सभी सरोंकारों की अभिव्यक्ति होती रही है। इसी अभिव्यक्ति की उपस्थिति को हम हिन्दी साहित्य के छायावाद युग में भी देखते हैं। छायावाद हिन्दी कविता आधुनिकता के युग में पुरानी कविता के विरोध में निकला हुआ एक विशेष भावानात्मक दृष्टिकाण एवं विशेष दार्शनिक अनुभूति और एक विशेष प्रकार की शैली है जिसके काव्य में प्रकृति का मानवीयकरण करके उसे एक नये रूप में प्रस्तुत किया गया है।

छायावादी कवियों में सुमित्रानंदन पंत को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा गया हैं क्योंकि कवि को प्रकृति की गोद में ही माता जैसा वात्सल्यमय और ममता से भरा स्पर्श प्राप्त होता हैं इसलिए कवि कहता है -

"माँ मेरे जीवन की हार।
तेरा उज्जवल हृदय-हार।।"[1]

पंत जी बचपन से ही अपनी माँ के नैसर्गिक सुख और प्यार से वंचित रहे, इसलिए उन्होंने इस सुख की क्षति पूर्ति प्रकृति की गोद में की। अपने कविता संग्रह 'गुंजन' की कविताओं में पंत जी प्रकृति को अपने समीप पाते हैं। जिस कारण से पंत जी प्रकृति और आसपास के वातावरण से भावनात्मक रूप से जुड गए थे। उनका मानना था कि प्रकृति के साथ अगर एकाकार होगे तभी प्रकृति भी हमारे सुख-दुख में सहभागी बन पायेगी। पंत जी ने अपनी कविता 'उच्छ्वास' के माध्यम से भी प्रकृति के सुन्दरतम एवं सश्लिष्ट दृश्यों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। पंत के काव्य में प्रकृति के मनोरम रुपों का मधुर और सरस चित्रण मिलता है।

छायावादी काव्य में एक प्रमुख नाम महादेवी वर्मा का भी है। जिनका काव्य आत्मा-परमात्मा के मिलन के साथ-साथ प्रकृति के व्यापारों की छाया भी स्पष्ट रुप से प्रस्तुत करता है। जो संसार को एक सूत्र में बाँधें रखने की क्षमता रखता है। अन्य छायावादी कवियों के समान ही महादेवी जी के काव्य में भी प्रकृति के सुंदर चित्र की प्रस्तुति देखने को मिलती है। महादेवी जी को प्रकृति में अपने प्रिय की अनुभूति होती है जिससे उनके काव्य में भावों में चेतना के साथ-साथ प्रकृति के प्रति एक अनूठा प्रेम लक्षित होता है। प्रकृति उनके काव्य को अलंकृत करने का कार्य अधिक करती है और उनकी भावनाओं की पृष्ठभूमि बनाती है। उनके काव्य में भिन्न-भिन्न प्रतीकों और नामों में प्रकृति के चित्र आरोपित होते है। वे कभी-कभी स्वयं विराट रुप धारण कर विराट की मिलन-उत्कंठा से प्रकृति के उपकरणों को अपने श्रृंगार का साधन बनाती है। जिसे हम इन पंक्तियों के माध्यम से महसूस कर सकते है- "शशि के दर्पण में देख-देख, मैने सुलझाए तिमिर केश।
गूंथे चुन तारक पारिजात, अवगुंठन कर किरणें अशेष।।"[2]

महादेवी जी प्रकृति से अपना श्रृंगार करती है। कहने का भावार्थ यह है कि महादेवी जी अपने प्रिय को आकर्षित करने के लिए प्रकृति के उपकरणों जैसे चाँद में वह अपने मुख देखकर अपना केशों को सुलझाती है। महादेवी जी एक चित्रकार भी थी प्रकृति के अनेक भव्य और अनूठे चित्र उनके काव्य के माध्यम से हमें देखने को मिलते है। उन्होंने अपनी समस्त भावनाओं और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति को प्रकृति के माध्यम से ही उकेरा है। उनकी कविता सांध्यगीत में वे अपने जीवन का तादात्म्य प्रकृति से स्थापित करती है- "प्रिय सांध्य गगन मेरा जीवन यह क्षितिज बना धुंधला विराग।
नव अरूण मेरा सुहाग छाया सी काया वीतराग।।"[3]

भावार्थ यह है कि महादेवी जी ने प्रकृति को मात्र जड़ नहीं माना है उन्होंने प्रकृति में पूर्णतः चेतन और सजीवता की कल्पना की है। उनकी यह कल्पना एक कविता के माध्यम से ही नहीं वरन् कई स्थानों पर उन्होंने प्रकृति की इस स्थिति का वर्णन किया है तभी वह कह उठती हैं कि प्रकृति उन से अलग नहीं है इसके माध्यम से वह यह संदेश देना चाहती है कि सम्पूर्ण मानव जाति प्रकृति से पृथक होकर नहीं रह सकती। प्रकृति में मानव जाति का कल्याण छुपा है। इसके लिए हम सभी को पर्यावरण का संतुलन बना कर रखना होगा।

पर्यावरण समस्या आज एक विश्वव्यापी समस्या बन चुका है प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक सभी ने

इस समस्या का प्रति सचेत किया था। छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद जी ने अपनी कालजयी कृति कामायनी के माध्यम से सचेत किया कि पर्यावरण सुरक्षा के लिए हमें प्राकृतिक उपादानों को सहेज कर रखने की जरुरत है। हम प्रकृति से उतना ही ग्रहण करें जितना हमें चाहिए। ज्यादा का लालच हमें बर्बादी की कगार पर लाकर खडा कर सकता है। हम प्रलय जैसी कई अपादाओं से घिर सकते हैं। जयशंकर प्रसाद जी का मानना था कि नदी, पर्वत, वन, झरनें सभी प्रकृति की देन है इन सभी के रुप में पर्यावरणीय संरक्षणात्मकता की विराट चेतना इस सम्पूर्ण संसार में विद्यमान हैं।

छायावादी कवियों का प्रकृति से एक अनूठा और अन्योन्याश्रित संबंध रहा है। निराला जी की कविताओं में सामाजिक सुधार, मानवता, और व्यक्ति की भावनाएँ व्यक्त हुई है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के प्रकृति के प्रति विचार उनके काव्य पर गहरा प्रभाव डालते है। निराला जी प्रकृति को केवल एक सुंदर दृश्य के रूप में ही नहीं देखते बल्कि उसका संबंध मानव जीवन के साथ भी स्थापित करते हैं। निराला की ज्येष्ठ कविता उनकी ऐसी कविता थी जिसकी विचारधारा पूर्णतयः नई थी। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी ने अपने प्रथम काव्य अनामिका काव्य संग्रह में संकलित ज्येष्ठ कविता के माध्यम से जेठ की दोपहर का वर्णन किया है। जिसमें उन्होंने ज्येष्ठ यानि जून की गर्मी को क्रूर एवं कर्कश बताया है और अपनी कविता के माध्यम से वह आह्वावान करते हैं कि - "ज्येष्ठ क्रूरता-कर्कशता के ज्येष्ठ! सृष्टि के आदि।

वर्ष के उज्जवल प्रथम प्रकाश।
सृष्टि भर के व्याकुल आह्वान! अचल विश्वास।
देते है हम तुम्हे प्रेम-आमन्त्रण
आओ जीवन-शमन, बन्धु, जीवन धन।।"[4]

छायावादी काव्य में प्रकृति में हो रहे परिवर्तन का चिन्तन दिखाई देता है। निराला जी के काव्य में कोमलता, नव शब्दों की मधुर योजना, प्रकृतिगत प्रतीकों की प्रचुरता देखने को मिलती है। उनके भावों में गहराई और प्रकृति का सूक्ष्म विवेचन दिखाई पड़ता है।

"कहलाने एके बसत अहि मयूर, मृग बाघ।
जगत तपोवन सों कियो, दीरध दाघ निदाघ।।"[5]

इस दोहे के माध्यम से बिहारी जी ने बताया है कि आपस में बैर रखने वाले जीव जैसे साँप, मोर, हिरण, बाघ आदि भी गर्मी के कारण तपोवन में आकर एक साथ रह रहे हैं। इन तपोवन में ऋषि-मुनियों ने एक साथ मिलकर तपस्या की थी। कवि बिहारी ने प्रकृति के सौंदर्य और उसके महत्व को अपनी कविताओं में चित्रित किया है। इसी प्रकार वर्तमान में मानव जाति को भी प्रकृति के साथ समन्वय करना चाहिए। हम गर्मी से बचने के लिए एयर कंडीशन, और भी अनेक ऐसे उपकरण है जिनका उपयोग करते हैं जिसके कारण गर्मी और अधिक बढ़ती जाती है। हम ऐसी इच्छाओं का दमन करना होगा जो जलवायु के साथ-साथ पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रही है। हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने होगें जिससे पर्यावरण शुद्ध होगा। हम अपनी दैनिक आदतों में भी सुधार ला सकते हैं, जैसे प्लास्टिक का उपयोग करके, विकसित और स्थिर ऊर्जा स्त्रोतों का इस्तेमाल करके, लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करके, पानी आदि का दुरुपयोग ना करके आदि विचार अपना कर हम पर्यावरण की सुरक्षा के साथ-साथ उसको बेहतर बना सकते हैं। हम प्रकृति से तभी सही तरीके से जुड़ सकते हैं जब हम प्रकृति को कोई नुकसान ना पहुंचाएं।

पर्यावरण और पंच महाभूत : हमारे चारों ओर जो आवरण है जिसे हम अनुभव करते हैं तथा जिनके साथ हमारी अंतः क्रिया होती है साथ ही जिन पर मानव और अन्य जीवों का जीवन निर्भर होता है पर्यावरण कहलाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वह स्थान जहाँ हम रहते हैं, भोजन करते हैं, हमारी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक सभी प्रकार की क्रिया-प्रतिक्रिया आदि सभी पर्यावरण का ही अंग है। हमारे चारों ओर का वातावरण सौन्दर्य से भरा पूरा नज़र आता है। इसकी सुंदरता देखकर इसकी शाश्वतता का, अनंतता का भाव मन में उठता है। शास्त्र कहते है कि प्रलय काल में यह सब ओर की सत्ता प्रकृति में लीन हो जाती है इसलिए हमारे लिए यह समझना आवश्यक है कि हमारा शरीर पंच भौतिक महाभूतों से बना हुआ है जिसमें जल, वायु, अग्नि, आकाश और पृथ्वी शामिल है। ये सभी प्रकृति के देन हैं। इन्हीं पाँचों के आधार पर मानव अपना जीवन व्यतीत करता है और मनुष्य अंत में इन सब तत्वों में लीन हो जाता है गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी कहा है कि-

"क्षिति जल पावक गगन समीरा
पंच रचित अति अधम शरीरा"[6]

कहने का तात्पर्य यह है कि प्रभु राम ने भी बाली की मृत्यु पर शोकाकुल पत्नि को भी यही संदेश दिया था कि हमारा शरीर

पंच तत्वों से मिलकर बना है और अंत में यह इन्हीं पंच तत्वों में विलीन हो जाता है। परन्तु यही पंच तत्व हमें जीवन यापन के लिए भी आवश्यक है जिनकी रक्षा करना मानव का धर्म है। पृथ्वी हमें स्थिरता, स्थूलता, और संरचनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। पृथ्वी तत्व शरीर के दृढ़ता और स्थिरता के साथ जुड़ा होता है। यह हमें शारीरिक शक्ति, संसाधन और सुरक्षा प्रदान करता है। जल तत्व संवेदनशीलता और जीवनदायिनी के रुप में हमारे लिए महत्वपूर्ण है। हमारे जीवन में अग्नि का संबंध शारीरिक पाचन और जीवन शक्ति के लिए लाभदायक माना गया है। अग्नि जीवन में हमें ऊर्जा का प्रवाह देती है। इसलिए पंचतत्वों का संतुलन जीवन में बहुत आवश्यक है क्योंकि पंचतत्व का मानव जीवन के साथ गहरा संबंध है।

निष्कर्ष : निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि छायावादी काव्य में प्रसाद ने प्रकृति तत्व को मिलाया, निराला ने इसे मुक्तक छंद दिया तथा पंत ने शब्दों को सरस और महादेवी ने इसमें प्राण डाले है। सभी अपने काव्य के माध्यम से संकेत देना चाहते थे कि जलवायु परिवर्तन का कारण कहीं ना कहीं हमारी उपभोगिता प्रवृत्ति है जो सीमित ना रह कर इतनी बढ़ गई है कि हम आज प्रकृति को भी नुकसान पहुंचा रहे है। इसी समस्या के कारण आज प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। मौसम चक्र का जो परिवर्तन था उसमें भारी बदलाव देखने को मिल रहे हैं। वर्तमान में ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याओं से हम जूझ रहे हैं। अगर हमें इसे रोकना है तो हमें प्रकृति से समन्वय करके चलना होगा। प्रकृति कहती है कि मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिए बस तुम इसे नष्ट मत करो और इसको प्रक्रिया में रखो। हमें प्रयास करना है कि हमारा सभ्यता ने जो हमें दिया है उसकी रक्षा करें। हमें सिर्फ बातों तक ही सीमित नहीं रहना है बल्कि उसे आचरण में भी उतारना है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. विनय कविता, पल्लव काव्य संग्रह में संकलित, कवि सुमित्रानंदन पंत, प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रकाशन तिथि 1918, आई.एस.एस.बी.एन., 81-267-0335-5.
2. क्यों वह प्रिय आता पार नहीं कविता, सांध्यगीत में संग्रहित, कवयित्री महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, प्रकाशन 1 जनवरी 2011, आई.एस.एस.बी.एन.-81-803-1120-1.
3. प्रिय! साध्य गगन कविता सांध्यगीत कविता संग्रह से , कवयित्री महादेवी वर्मा, 1935, लोकभारती प्रकाशन, 1 जनवरी 2011, आई.एस.एस.बी.एन.-81-803-1120-1.
4. ज्येष्ठ कविता, प्रथम काव्य संग्रह अनामिका में संकलित, कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, प्रकाशक नवजादिक लाल, 23 शंकर घोष लेन, कलकत्ता, प्रकाशन तिथि 1923.
5. बिहारी सतसई, कवि बिहारीलाल, दोहा संख्या 565, संपादक सुधाकर पांडेय प्रकाशन नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी-नई दिल्ली.
6. तुलसीदास कृत रामचरितमानस, किष्किंधा कांड, टीकाकार हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्रकाशक गीतापुर प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 596.

मूल/आधार ग्रंथ/वेबसाइट :

1. पर्यावरण व पर्यावरण शिक्षण पत्रिका, समन्वयक डेकेश्वर प्रसाद वर्मा, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद छत्तीसगढ़, रायपुर, प्रकाशन वर्ष 2021 पृष्ठ संख्या 3.
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, संपादक डॉ. नगेन्द्र एवं डॉ. हरदायल, प्रकाशक मयूर पेपरबैक्स, सैतीसवां पुनर्मुदण संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या 514.
3. डाउन टू अर्थ पत्रिका, लेख "साहित्य में पर्यावरण: हिन्दी में प्रकृति और पर्यावरण में अंतर जानना जरुरी, 7 अक्टूबर 2021.
4. कवि पंत और उनकी छायावादी रचनाएं, लेखक डॉ. पी0 आदेश्वर राव, प्रगति प्रकाशन आगरा, 1972, पृष्ठ 41.
5. नई धारा पत्रिका. लेख महादेवी वर्मा की कविता, लेखक विनयमोहन शर्मा, 1 अप्रैल 1951.
6. तुलसीदास कृत रामचरितमानस, प्रकाशन गीता प्रेस, गोरखपुर, 2010, पृष्ठ संख्या 152.
7. जयशंकर प्रसाद कृत कामायनी, प्रकाशक हिन्द पॉकेट बुक्स, प्रथम संस्करण 1988, पृष्ठ संख्या 89.
8. अनामिका काव्य संग्रह, कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, 'ज्येष्ठ कविता'
9. https://hindisamay.com

•